ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 507-509

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

प्रसन्नराघव नाटक के द्वितीय अंक का महत्व

संतोष कुमार
ग्राम– डाड़ी रावत, पो0– बाँसगाँव, जिला– गोरखपुर (उ0प्र0) भारत

Received- 05.08.2020, Revised- 09.08.2020, Accepted - 13.08.2020 E-mail: - hardev2683@gmail.com

सारांश : ***इस प्रकार लोक प्रसिद्ध यह ताटक्ड युगल वीर–माता के श्रोत्र–युग्म में रहने के लिए योग्य है। यह बात भीतर चमकती हुई रत्नों की वर्णमाला जैसा सूचित कर रही है तथा तापस यह सुनकर वह ताटक्डयुगल रावण की माता निकषा के ही कर्ण युग्म के योग्य है ऐसा विचार कर उसे लाने के लिए ताटका के पास पहले ही अपना एक अनुचर भेजा गया है। अभी भी निश्चय ही ताटका उस ताटक्ड युगलको ला चुकी है। ऐसा विचार कर उसे लाने के लिए ताटका के पास मैं भेजा गया हूँ।1***

कुंजीभूत शब्द– लोक प्रसिद्ध, ताटक्ड युगल, श्रोत्र–युग्म, वर्णमाला, निश्चय, अनुचर, उपदिष्ट, निकषा, ताटका।

राम हर्ष के साथ कहते है क्या चैत्र मास की शोभा आ गई। इस पर विचार कर यह ऐसा है। जैसे कि इस उपवन में बेलू के फूल का रस पीने वाली भ्रमरियों का सूक्ष्म मधुर ध्वनि का संप्रदाय शोभित हो रहा है। यहां दाक्षिणात्य वायु से प्रतिशब्द अथवा पग–पग पे उपदिष्ट अशोक की मञ्जरी विलास के साथ नृत्य कर रही है।

और मलयपर्वत की चोटी से कैलास पर्वत पर्यन्त लोकमण्डल के कामदेव की आज्ञा से जीतने की इच्छा करता हुआ वसन्त ऋतु का वायु कैलास की चोटी में वास करने वाले सर्प को धारण करने वाले महादेव को मन में विचार करता हुआ डरकर धीरे–धीरे बह रहा है मैं ऐसी आशंका करता है।2 इस प्रकार लक्ष्मण ने कहा– आर्य! मैं तो ऐसा विचार करता हूँ कि प्रत्येक मार्ग में रस गिराने वाले फूलों की वृद्धि करती हुई लतासुन्दररियों से हर्षपूर्वक पूजित के सदृष, भ्रमरियों के गीत में आसक्त मृग में आरूढ़ वसन्तु वायु वन में धीरे–धीरे वह रहा है तथा राम देखकर इस ओर यह कैसे चण्डिकामन्दिर है। हाथ जोड़कर हे करूणापूर्ण तरग्डों की नदि! हे चन्द्रशेखर की रमणि! आपकी पूजा करता हूँ।[3] इस प्रकार भीतरी भाग के सदृश पीतवर्ण और हल्दी के रस के समान शोभा प्रवाह को धारण करने वाले अंगों से उपलक्षित एवं कामक्रीडा के भवन की अटारी में दीपिका के सदृश यह कौन सुन्दरी प्रादुर्भूत हो रही है और राम ने कहा हरे! अनिन्दित समस्त अग्डवाली कहना चाहिए। इसके ओष्ठ (दोपहरिया नाम के रक्तपुष्प) के समान, नेत्र सफेद केतकी– पुष्प के समान, कपोल मधूक (महुआ) नाम के फूल) के कोरक के तुल्य मनोहर दांतो की पंक्ति अनार के बीजों को जीतने वाली और मुख विकसित कमल को भी दास बनाने वाला है।[4] राम ने कहा अहो! अल्हड अवस्था में भी इसकी स्वभाव सुन्दर वस्तु के परिचय के औचित्य में चतुराई है। यह चरणों से विकसित रक्त कमलों की कान्ति को मात करती है। हाथों से नये पल्लवों की लालिमा को ग्रहण करती है। ओष्ठों के अग्र भाग से प्रवाल (मूंगा) की कान्ति को पी जाती है और मन्द हास्य के कान्ति प्रवाहों से चन्द्रमा की कान्ति का उपहास करती है। इस प्रकार सीता से सखी कहती है कि – अञजिता बॉधकर हे चन्द्र कान्त मणिमाला के तुल्य को मले। हे चन्द्रशेखर की गोद में सोने वाली! चन्द्र के समान सुन्दर मुख से युक्त मेरी सखी शीघ्र चन्द्रमा के सदृश सुन्दर वर को प्राप्त कर ले।5 राम विचार कर यह योग्य है। यह दो अवस्थाओं (वाल्य और यौवन) की सन्धि में रह रही है। जैसे कि बचपन के बीतने पर जवानी के आने की इच्छा करने पर अल्हड़पन के जाने पर और चातुर्य के आलिग्डन करने में रसिक होने पर सुन्दरी (सीता) के जिस शरीर को किसी अवस्था ने भी स्पर्श नही किया, वैसा यह कामदेव का श्रेष्ठ मर्म (तत्वभूत) होता हुआ इस संसार में उत्कर्षपूर्वक रह रहा है। राम ने (विषाद के साथ) कैसे यह लता से व्यवहित हो गई। लता से हे लते! जिसने अपने स्तनों से तुम्हारी गुच्छ – शोभा जीत ली है एवं ओष्ठ से तुम्हारे पल्लव की नई शोभा तिरस्कृत कर दी है, चंचल नेत्रों से युक्त इस (सीता) को आच्छादित करने वाली तुम्हें क्या लज्जा नही होती? फिर हर्ष के साथ श्याम कान्ति वाले कदलीपत्रो के बीच प्रकट होने वाली यह सीता नये मेघों के बीच में प्रकाशित होने वाली चन्द्रकला की तरह मुझे चकोर के समान आनन्दित कर रही है। फिर कदली से हे बालहेम लतिके! तुमचञ्चल और बड़े–बड़े नेत्रो से युक्त सुन्दरी सीता की उरूशोभा को प्राप्त करने की इच्छा करती हो क्या? तो इस विलासवती सीता को बहुत समय तक विलम्बित करो (अपने पास ठहराओ) क्योंकि स्त्रियों की कलाएँ परिचित होने पर स्थैर्य को प्राप्त करती है।6

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

राम (हर्ष के साथ) अहो! मेरे चितरुप कुमुद के आनान्द के लिए शरदऋतु की पूर्णिमा रात्रि के समान यह (सीता) फिर भी इस ओर आ रही है। देखकर इसके नेत्र विकसित नवीन नीलकमलो की उपमा को धारण करते है। इसका मुख पूर्णचन्द्र की शोभा को प्राप्त करता है। इसके स्तन कुछ ही लिखे हुए कमलों की उपमा को पाते है और केश कलाप विचित्र रात्रि शोभा को प्रकट कर रहे है। यह ऐसी संभावना (अटकल) करती है, परन्तु मेरा दूसरा ही तर्क है। हे चन्द्रमुखि! कामदेव ने पतली इस तुम्हारी देहलता को अपना धनु समझकर मुट्ठी से मध्यदेश (कमर) में पकड़ा जिस कारण से इस (देहलता) में तीन उदर रेखाओं के बहाने से तीनों लोकों को आकर्षण करने की मुद्राओं का अनुकरण करने वाली तीन अंगुलि सन्धियों की रेखाएं प्रकाशित हो रही है।7 इस प्रकार सखी कहती है राजकुमारि! यह वासन्तीलता है। आप यह भी देखिऍं। इस बागीचे में भ्रमर मनोहर वासन्तीलता रस बिन्दु को पी रहे है और चिरकाल से आधारभूत कमल को धीरे–धीरे छोडते जा रहे है। इस प्रकार सीता (उसी श्लोक की पढती है) राम कहते है कि अभी दूसरी लता के वर्णन से क्या? अरे! इसने ही बाल्याडवस्थारूप शिविर ऋतु को छोड़कर तारुण्य रुप वसन्त की नवीन शोभा प्राप्त कर ली है। विकसित स्तन ही जिसके नये पुष्पगुच्छ है इस सुन्दरी (सीता) की ऐसी देहलता हमारे हर्श को यथेष्ट फैला रही है। तथा राम ने सीता की सुन्दरता का वर्णन कर रहे है। हन्त! निर्मल मृणालकाण्ड के समान मनोहर कपोल कान्ति से युक्त चन्चल और विलासपूर्ण नील कमलों के सदृश विकसित नेत्रो से सम्पन्न और विकसित अशोक पुष्प के समान हस्तशोभा को धारण करने वाली सुन्दरी (सीता) के तारूण्यगर्व से चन्चल श्रृंगार चेष्टांए मन को आकृष्ट कर रही हैं।8

सीता राम को देखकर कौतुक के साथ विकसित कोमल नील कमलों के पत्र समूह के सदृश नील वर्ण महादेव जी के मनोहर शेखर में भासमान चन्द्र के सदृश कोमल, कामदेव के रुप को मात करने वाला लता गृह में अवस्थित यह कौन पुरूष मेरे नेत्रो में सुख दे रहा है और हे हरिणाक्षि सीते! कमल के घमण्ड को छुडाने वाले नेत्रों को ऊपर कराओं (उँचा करो)। हे सुन्दरि! आकाश यमुना के तरंग समूह के सदृश गहन हो। सखी (प्रेम के मन्द हास्य के साथ) सखीजन में भी हदय को मत छिपाओं। मैंने जान लिया। हे सखि! मयूरपिच्छ से भूषित, श्वेत कमलो के सदृश सुन्दर नेत्रों से युक्त और नील कमल की पंक्ति की नाई कोमल इस राम नाम वाले कामदेव में तुम्हारा मन है। (यह मैंने जान लिया) ।9

सीता सखि! देखो देखो कामदेव की पत्नी (रति) के नूपुर शब्द के समान मनोहर और अनिर्वचनीय प्रकार से शब्द करता हुआ आम्र के मुकुल के मकरन्द को पान करने से मधुर मुख शब्द वाला भ्रमर भ्रमण कर रहा है। फिर मन ही मन हे नेत्रो! पिय जन (राम) के मुख कमल के मकरन्द का पान कर लों। हे चन्चलो! फिर तुम दोनो कहां और ये कहॉं? इस बात का विचार कर लों। राम (देखकर) नई जवानी का सर्वस्य भोग का भवन (आश्रयस्थान), नेत्रो का भाग्य यौवनमद के विलास का सौभाग्य संसार का सार जन्म का सत्परिणाम, कामदेव का अभिप्राय– विशिष्ट स्थान राम का हदय राग की पराकाष्टा और श्रृंगार का रहस्य कुवलय लोचना (सीता) का वह अनिर्वचनीय दर्शन है और सीता मन ही उसी गाथा को पढ़ती है। लिखते हुए निर्मल और कोमल कुवलय के पत्रो की शंका से आकुल यह भ्रमर शिशु आप के इन नेत्रों के पास प्रतिक्षण अनुसरण कर रहा है।10 राम (इच्छापूर्वक) चन्चल नेत्रो से युक्त (सीता) अमृतमय समुद्र के दूध के समान महा तरग्डों के तुल्य, चन्चल दृष्टिपातों से जिसमें मुझे नही रही है (अनुग्रहीत कर रही) है। सदा ही यह उत्तम मुहुर्त वना रहे। (विचार कर खेदपूर्वक) अथवा यह बात कैसे हो सकती है? ब्रह्मा जी की रचनाऍं संयोग और वियोग से मिश्रित है। हे राजकुमारि! आपकी मुख रेखा चन्द्र मण्डल के समान है, दन्तकिरणों की शोभा निर्मल चाँदनी के सदृश है और दृष्टि नील कमल के पत्ते की द्रोणी के मध्य भाग में बहती हुई चन्चल और अधिक मधुर दूध की धारा के तुल्य है।11

इसलिए पधारिए अपने भवन में ही चलें। (फिर आशापूर्वक) दिन में अदृश चांदनी रात में जैसे चकोरों के सामने आविर्भूत होती है उसी तरह यह (सीता) मेरे नेत्रों में प्रकट हो। हे आर्य! सुन्दर और क्रीड़ा से ही कामदेव की धनुर्यष्टि को जीतने वाले चन्द्रमा की वा किसी वर की कान्ति को अतिशय ही फैलाने वाली राग से लालिमा सेवा अनुराग से) युक्त व्यक्त रुप से नक्षत्रों की वा नेत्रों की शोभा को प्रदर्शित करने वाली सन्ध्या, कोई स्वयंवर करने के लिए प्रस्तुत वधू के समान प्रकट हो रही है। हे भगवान कमलबान्धव (सूर्य) सब लोकों को विकसित कर विष्णु भगवान के शरीर के भीतर मुद्रित नाभि–कमल को विकसित करने में उत्कण्ठित के समान होकर इस समय समुद्र के भीतर प्रवेश कर रहे है। राम के द्वारा यह ठीक है क्योंकि इस समय कुलटओं के बन्धु गाढ अन्धकार समूह के पूर्व दिशा की ओर कुलटाओं के वैरी चन्द्र किरण समूह के पश्चिम दिशा को प्राप्त होने पर आधा काला पत्थर वाला और आधा स्फटिक से युक्त दिशाओं का मध्य भाग, गंगा और यमुना के मिलते हुए निर्मल जल के प्रवाह समूह का सादृश्य व्यक्त कर रहा है।12 फिर हर्ष के साथ उंगली से

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

दिखाते हुए चक्रवाक की कुटुम्बिनी (कमलिनी) के मन के शल्य रुप, परस्पर मिली हुई चकोरो के चन्च्वग्र रुप किवाडों को खोलने के लिए कुञ्जी, दग्ध कामवृक्ष का नवीन अंकुर, नये अपराध वाले नायको की प्रियतमाओ का प्रणयकोप रुप मत्त हाथी का अकुंश और सुन्दर यह चन्द्रमण्डल अतिशय उत्कर्ष के साथ प्रकाशित हो रहा है।

इस प्रकार लक्ष्मण के द्वारा कहने का तात्पर्य यह है कि महा–तरंग से जिसका कलंक दूर हो गया है एवम् महादेव के शिर में वहती हुई आकाशगंगा के मृणालदण्ड कर्पूर के चूर्ण समूह के तुल्य काम पत्नी के मदिरा पीने के पात्र के सदृश (उज्जवल), क्षीर समुद्र के बान्धव, आकाश रुप कमलिनी–पत्र में जल बिन्दु के समान लोक भूषण यह चन्द्र खण्ड किसके अन्तः करण में संतोष को पल्लवित नही करता है।13

राम ने लक्ष्मण से कहा वत्स! अब अधिक वर्णनमत करों। इसलिए आओ सायंकाल के देव पूजन योग्य फूलों के उपहार से भगवान् विश्वामित्र की सेवा करें। और सब निकल पड़ते है। इस प्रकार प्रसन्न राघवम् नाटका द्वितीय अंक समाप्त हो जाता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. प्रसन्नराघव नाटक द्वितीय अंक– व्याख्याकार आचार्य शेषराज शर्मा रेग्मी, प्रकाशन चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी पृ0 89 से 90 श्लोक 1–2।
2. प्रसन्नराघव नाटक द्वितीय अंक व्यख्या0 आचार्य शेषराज शर्मा रेग्मी, प्रकाशन चौखम्वा विद्याभवन, वाराणसी पृ0 सं0 94 से 95 तक श्लोक 3–4।
3. प्रसन्नराघव नाटक द्वितीय अंक व्यख्या0 आचार्य शेषराज शर्मा रेग्मी, प्रकाशन चौखम्वा विद्याभवन, वाराणसी पृ0 सं0 96 से 97 तक श्लोक 5–6।
4. प्रसन्नराघव नाटक द्वितीय अंक व्यख्या0 आचार्य शेषराज शर्मा रेग्मी, प्रकाशन चौखम्वा विद्याभवन, वाराणसी पृ0 सं0 99 से 101 तक श्लोक 7–8।
5. प्रसन्नराघव नाटक द्वितीय अंक व्यख्या0 आचार्य शेषराज शर्मा रेग्मी, प्रकाशन चौखम्वा विद्याभवन, वाराणसी पृ0 सं0 102 से 104 तक श्लोक 9–10।
6. प्रसन्नराघव नाटक द्वितीय अंक व्यख्या0 आचार्य शेषराज शर्मा रेग्मी, प्रकाशन चौखम्वा विद्याभवन, वाराणसी पृ0 सं0 105 से 108 तक श्लोक 11–14।
7. प्रसन्नराघव नाटक द्वितीय अंक व्यख्या0 आचार्य शेषराज शर्मा रेग्मी, प्रकाशन चौखम्वा विद्याभवन, वाराणसी पृ0 सं0 110 से 113 तक श्लोक 15–18।
8. प्रसन्नराघव नाटक द्वितीय अंक व्यख्या0 आचार्य शेषराज शर्मा रेग्मी, प्रकाशन चौखम्वा विद्याभवन, वाराणसी पृ0 सं0 114 से 115 तक श्लोक 19–20।
9. प्रसन्नराघव नाटक द्वितीय अंक व्यख्या0 आचार्य शेषराज शर्मा रेग्मी, प्रकाशन चौखम्वा विद्याभवन, वाराणसी पृ0 सं0 116 से 119 तक श्लोक 21–23।
10. प्रसन्नराघव नाटक द्वितीय अंक व्यख्या0 आचार्य शेषराज शर्मा रेग्मी, प्रकाशन चौखम्वा विद्याभवन, वाराणसी पृ0 सं0 120 से 122 तक श्लोक 24–27।
11. प्रसन्नराघव नाटक द्वितीय अंक व्यख्या0 आचार्य शेषराज शर्मा रेग्मी, प्रकाशन चौखम्वा विद्याभवन, वाराणसी पृ0 सं0 123 से 125 तक श्लोक 28–29।
12. प्रसन्नराघव नाटक द्वितीय अंक व्यख्या0 आचार्य शेषराज शर्मा रेग्मी, प्रकाशन चौखम्वा विद्याभवन, वाराणसी पृ0 सं0 126 से 127 तक श्लोक 30–31।
13. प्रसन्नराघव नाटक द्वितीय अंक व्यख्या0 आचार्य शेषराज शर्मा रेग्मी, प्रकाशन चौखम्वा विद्याभवन, वाराणसी पृ0 सं0 128 से 131 तक श्लोक 32–35।

*****